नवनीत कृष्ण

बिहारशरीफ़, नालंदा

भूख का कोई धर्म नहीं

भूख तो भूख है साहब,
ना इसकी कोई जात होती है,
ना मज़हब,
ना मंदिर की सीढ़ियाँ पहचानती,
ना मस्जिद की दहलीज़ पर झुकती—
ये बस पेट की आग है,
जो हर इंसान के भीतर
एक-सी जलती है।

कौन हिन्दू, कौन मुसलमान,
ये तब पूछते हैं लोग
जब थाली भरी होती है।
जिसकी थाली खाली हो,
वो सिर्फ रोटी का धर्म जानता है साहब,
बस रोटी का।

सियासत के रंगों में
भूख को कब तक रंगोगे साहब?
क्या ख़ाली पेटों के आँसू भी,
अलग-अलग मजहब के होंगे?

देखिए ज़रा गौर से,
उस गली के मोड़ पर बैठा वो बच्चा,
जिसकी आँखों में
न "जय श्री राम" है,
न "अल्लाह हू अकबर"
उसकी आँखों में बस
एक सवाल काँप रहा है...
"रोटी मिलेगी क्या साहब ...?"

भूख किसी भी दल का नहीं होता है,
ये तो सच्चाई का आईना है।
जो रोटी बाँट दे
वही धर्म,
वही जात,
वही इंसानियत कहलाती है।

क्योंकि साहब,
भूख तो भूख है,
और भूख का
कभी कोई धर्म नहीं होता...!!